126

ISSN-2231-3885 Samved

संवेद

जुलाई 2022, मूल्य : ₹ 40

भारत एक स्वप्न

भरत प्रसाद

ISSN-2231-3885 SAMVED

संवेद-126
जुलाई, 2022

भारत एक स्वप्न

(साहित्येतर वैचारिकी)

भरत प्रसाद

सम्पादक
किशन कालजयी

ISSN-2231-3885 SAMVED

संवेद -126

जुलाई, 2022

सम्पादक : **किशन कालजयी**

सम्पादकीय सम्पर्क
बी–3/44, सेक्टर–16,
रोहिणी, दिल्ली–110089
मो. : +918340436365
samvedmonthly@gmail.com

आवरण चित्र एवं रेखांकन : अनुभूति गुप्ता
आवरण संयोजन : शशिकान्त सिंह

वितरक
रचनाकार पब्लिशिंग हाउस
डी-18, स्ट्रीट नम्बर-9, जगतपुरी एक्सटेंशन
शाहदरा, दिल्ली-110093

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक कुमकुम कुमारी द्वारा
बी–3/44, सेक्टर–16, रोहिणी, दिल्ली–110089
से प्रकाशित और लक्ष्मी प्रिंटर्स, 556, जीटी रोड,
शाहदरा, दिल्ली–110032 से मुद्रित।

इस अंक का मूल्य : चालीस रुपये
वार्षिक सदस्यता : सात सौ रुपये
रजिस्टर्ड डाक से–एक हजार रुपये
आजीवन : दस हजार रुपये

सम्पादन : अवैतनिक
लेखकों के व्यक्त विचारों से सम्पादक या प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
पत्रिका से सम्बन्धित समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अन्तर्गत विचाराधीन।

भारतराग

'भारतवर्ष' क्या महज एक देश का पुकार नाम है? क्या वह पृथ्वी से नाभिनालबद्ध एक जन्मजात भूखण्ड है या फिर आड़ी, तिरक्षी घुमावदार रेखाओं में राजनीतिक निगाहों से दिया गया नक्शा? या फिर चन्द सदियों के बुद्धिमान मनुष्यों के बीच सत्तान्ध युद्धों का लहूलुहान रणक्षेत्र? लगभग 9 करोड़ वर्ष पहले आदमी की जन्मभूमि अफ्रीका महाद्वीप से जुदा होकर उत्तर-पूर्व की दिशा में ऊपर उठता एक अनाम, अनगढ़ उप महाद्वीप देश की अद्वितीय भूमिका निभाने को तत्पर हो चुका था। शायद पृथ्वी भी पंचरत्नों की तरह अपने पाँच महाद्वीपों को, करोड़ों वर्षों की मातृपीड़ा सहने के बाद मानव जाति के लिए तैयार कर चुकी थी। मेरी आँखें यदि ब्रह्माण्ड को समर्पित हैं तो भारत ब्रह्माण्ड के हृदय का टुकड़ा है, यदि सौर्यमण्डल के पक्ष में खड़े हैं तो पृथ्वी के बहाने सूर्य की तरफ से दिया हुआ एक स्वर्णिम तोहफा। यदि पृथ्वी की आँखों से भारतवर्ष को देखें-तो अद्भुत हृदय से भरे विलक्षण मनुष्यों के सृजन की प्रयोगशाला। जिसे हम भारत का इतिहास कहते हैं, वह दरअसल पृथ्वी के भारत का नहीं, बल्कि एक अद्भुत भूगोल को जनपद, संघ, राज्य, साम्राज्य में बाँट-काटकर जीने-मरने वाले अविकसित दिल वाले मनुष्यों की अहंकार गाथा है। यह अनाम अस्तित्व जिसे अपना देश कहते हैं- वह जितना हमारा है, उतना ही नदियों, पर्वतों, खेतों-खलिहानों जंगलों का है, जितना ही मेरे लिए है, उतना ही जीवों, जानवरों, पक्षियों, कीड़ों, जन्तुओं के लिए भी है। वह एक सप्राण या निर्जीव सत्ता भारतवर्षी कहलाने का हकदार, है जितना कि इस देश का बड़ा से बड़ा और साधारण से साधारण मनुष्य। जब इस भूभाग पर हमारे अस्तित्व की सम्भावना दूर-दूर तक न थी, तब भी वन, प्रान्तर, कछार, मैदान, बारिश, धूप, आँधी, प्रभात और मनमोहिनी सन्ध्या भारत के वजूद से लिपटे थे, जब हम फिर अस्तित्वहीन हो जाएँगे, तो ये सभी मिट चुकी दशा में ही सही भारतवर्ष की काया से सन्तान की तरह लिपटे रहेंगे।

तो आइए, जो आँखें हमें इतिहास ने दीं, एक देश को पहचानने, परिभाषित करने की, उसे निकाल फेंकें। विदा कर दें वह व्यावसायिक बुद्धि जो देश को एक भूखण्ड से ज्यादा देख नहीं पा रही। जब भारत हमारी कल्पना की अपूर्व सुगन्ध बन जाएगा, जब 'न भूतो न भविष्यति' की तरह हमारी अन्तर्दृष्टि का तारा हो जाएगा, तब शायद इतिहास की सारी सीमाओं को तोड़ता हुआ एक पृथ्वीमय भारतवर्ष का अपूर्व इतिहास सिर ऊँचा करेगा।

मई, 2022 **भरत प्रसाद**

अनुक्रम

भारतराग	5
पृथ्वी का भारतवर्ष	9
भारत की गुलामी के चक्रव्यूह	30
रैशनेलिटी के आन्दोलन में जागरण	49
वैज्ञानिक अन्तश्चेतना का विकल्प	61
भारत के यौवन का शिखर शेष है	77
अदम्य विस्फोट के लिए कसमसाता भूखण्ड	92
सन्दर्भ-पुस्तकें	98

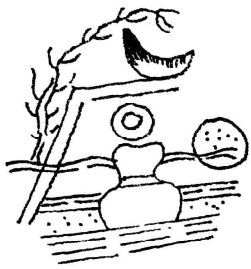

पृथ्वी का भारतवर्ष

नीले ग्रह पृथ्वी के हरिताभ देश भारतवर्ष की आत्मा कब से, कहाँ से और कैसे आरम्भ होती है- यह हृदयंगम करने के लिए हमें कल्पना में पंख लगाते हुए, तर्क दृष्टि को सूक्ष्म और सटीक करते हुए, साथ ही सोच को सीमाहीन बनाते हुए करोड़ों वर्ष पूर्व की समय यात्रा करनी होगी। बात तब की है, जब सूरज अनन्त सदियों को रौशन करने के लिए अस्तित्वमान हो चुका था। सारे ग्रह, उपग्रह, धूमकेतु अपनी-अपनी कक्षाओं में आश्चर्यजनक रूप से सन्तुलन बना चुके थे। न इंच भर विचलन, न रत्ती भर भटकाव। स्वयं सूरज गोली की गति (**251 किमी. प्रति सेकेण्ड**) से आकाशगंगा के केन्द्र की परिक्रमा करता हुआ अपनी कालजयी रौ में सध चुका था। तब पृथ्वी अनाम, अलक्षित, अप्रत्याशित और जीवन शून्य नीलाभ समुद्री गोले का मन्त्रमुग्ध स्वरूप धारण कर चुकी थी। बात है, आज से 27 करोड़ वर्ष पूर्व की तब न सप्तरत्न की तरह सात महाद्वीप थे और न हमारी निगाहों की क्षमता स्वीकार न करने वाले अलग-अलग समुद्र। तब जो कुछ था-नाभिनाल बद्ध आपस में अंगबद्ध, अस्तित्व बद्ध अभिन्न और एकमएक। तब न यूरोप का दूर-दूर तक नामोनिशान था, न एशिया का, न सुपर पावर अमेरिका के भूगोल की कहीं खबर थी और न ही दक्षिण अमेरिका महाद्वीप की। अर्थात् आज के 27 करोड़ वर्ष पहले धरती का सम्पूर्ण विस्तार आज के सातों महाद्वीपों के कुल जोड़ के ठीक बराबर था। महाद्वीपों के जन्म का यह तथ्यवादी सिद्धान्त जर्मनी के भूवैज्ञानिक **अल्फ्रेड वेगेनर (1880-1930 ई.)** ने दिया। उस आदि एकाश्मक महाभूमि का नाम था-**'पैंजिया'**। और उसके चारों ओर सृष्टिकर्ता बनने को आतुर अस्तित्व की तरह गरजता, उछलता, उठता स्वर्णाभ, जगमग परम समुद्र था-जिसे हम आज **'पैथालासा'** कहते हैं। आज से करीब 20 करोड़ वर्ष पूर्व पहली बार पृथ्वी सांसारिक बनने के लिए करवट बदलती है, जीवमय, पक्षीमय और अन्ततः मनुष्यमय होने के लिए खुद ही खुद को बाँटना आरम्भ करती है। सात करोड़ वर्षों तक पृथ्वी के नृत्य के साथ जागता, सोता, तैरता और पैथालासा